17 मई 2015, कुल पृष्ठ : 4, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रात: 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 4
मई (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2541)
सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

शिलान्यास समारोह संपन्न

ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ललितपुर द्वारा निर्माणाधीन श्री 1008 दिगम्बर जैन शीतलनाथ जिनमंदिर वेदी एवं शिखर का भव्य शिलान्यास समारोह दिनांक 6 मई को अत्यंत हर्षोल्लास सहित संपन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 3 मई को पण्डित नन्हे भैया सागर द्वारा तीनों समय समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर एवं दिनांक 4 मई को पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन का लाभ मिला।

दिनांक 6 मई को प्रात:काल जिनेन्द्र-पूजन के उपरांत शिलान्यास शोभायात्रा श्री सीमन्धर जिनालय से प्रारम्भ हुई, जिसमें केसरिया साड़ी पहने महिलायें मंगल कलश, जिनवाणी एवं रत्नत्रय प्रतीक को लेकर चल रही थीं। साधर्मी पुरुष वर्ग श्वेत वस्त्रों में भजन गाते हुये चल रहे थे। शोभायात्रा शहर के प्रमुख मार्ग से होती हुई शिलान्यास स्थल के निकट जगदीश मार्केट धर्मशाला में पहुँची, जहाँ शिलान्यास सभा संपन्न हुई।

सभा का प्रारम्भ पण्डित गोकुलचंदजी सरोज के मंगलाचरण से हुआ। पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने प्रासंगिक मार्मिक उद्बोधन दिया। ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना ने उद्बोधन एवं प्रशस्ति-पत्र पढकर सुनाये। ब्र. कैलाशचंदजी अचल, श्री वज्रसेनजी दिल्ली, श्री अनिलजी अंचल एवं श्री सतीशजी नजा ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री सुभाषजी जयसवाल ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया एवं श्री मुन्नालालजी अभिलाषा ने सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया। सभा का कुशल संचालन श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल के निर्देशक श्री सुरेशकुमारजी एडवोकेट बानपुरवालों ने किया।

शिलान्यास स्थल पर विधि-विधानपूर्वक ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना एवं सहयोगी प्रतिष्ठाचार्यों के माध्यम से श्री करतार चन्द अभिलाष परिवार द्वारा ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात् वेदी एवं शिखर शिलान्यास सम्पन्न हुआ। वेदी शिलान्यासकर्ता श्री प्रदीपजी किशनगढ एवं शिखर शिलान्यासकर्ता श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा की अनुपस्थिति में विद्वत्वर्ग के माध्यम से शिलान्यास किया गया।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ अ. भा. जैन युवा फैडरेशन एवं दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप वात्सल्य के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 13 मई तक षष्ठम जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता, डॉ. मनोज जैन, ब्र. श्रेणिक जैन, पण्डित संतोषजी शास्त्री एवं टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के 15 विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रात:काल जिनेन्द्र-पूजन के अतिरिक्त वर्गवार सामूहिक कक्षाओं का आयोजन हुआ। दोपहर में सामूहिक कक्षाओं में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। रात्रि में जिनेन्द्र-भक्ति के पश्चात् पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा संगीतमय कथा व अन्य ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

शिविर में लगभग 450 बालक-बालिकाओं ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

इन्द्रध्वज महामण्डल विधान संपन्न

सोलापुर (महा.) : यहाँ गांधी नाथारंगजी दिगम्बर जैन बोर्डिंग के मैदान पर श्री इन्द्रध्वज मण्डल विधान दिनांक 26 अप्रैल से 2 मई तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर अनेक वर्षों बाद सोलापुर में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल पधारे और उनके 'णमोकार महामंत्र' पर सरल-सुबोध भाषा में हुये प्रवचन बहुत सराहे गये। साथ ही पण्डित जितूभाई, पण्डित आलंडकर आदि विद्वानों के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधान के अवसर पर श्रीडी एनिमेशन द्वारा अकृत्रिम चैत्यालयों की प्रोजेक्टर पर पण्डित विक्रान्तजी शहा की प्रस्तुति विशेष प्रशंसनीय रही। विधान में लगभग 250 इन्द्र-इन्द्राणी बनकर सम्मिलित हुये और लगभग 1500-2000 साधर्मियों ने प्रवचनों का लाभ लिया।

विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनील-अनिल-दीपकजी धवल भोपाल द्वारा शुद्ध तेरापंथाम्नायानुसार सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व योगदान के लिये डॉ. भारिल्लजी का सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया।

जापान में जैनधर्म का प्रतिनिधित्व

टोक्यो : यहाँ जापान द्वारा आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में युवा राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित डॉ. अनेकान्त कुमार जैन (सहायकाचार्य - जैनदर्शन विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली) ने भारत की ओर से जैनधर्म का प्रतिनिधित्व किया।

इस अवसर पर जैनधर्म दर्शन की प्राचीनता, अहिंसा व अनेकान्त के माध्यम से वैश्विक शांति की स्थापना में जैनधर्म के योगदान को रेखांकित किया। साथ ही इन्हीं सिद्धांतों से विश्व की भावी दिशा तय करने पर ही सच्चे अर्थों में शांति स्थापित हो सकती है - इस बात को अपने व्याख्यान द्वारा प्रस्तुत किया।

सम्मेलन में पूरी दुनिया के कई देशों से विभिन्न धर्मों के विद्वानों ने विश्व शांति के उपायों पर अपनी बात रखी। ज्ञातव्य है कि भारत से मात्र डॉ. अनेकान्त जैन ही प्रतिनिधित्व कर रहे थे। व्याख्यान के बाद सभी लोगों में जैनधर्म को जानने की उत्सुकता और अधिक बढ गई। प्रारम्भ में उद्घाटन समारोह के अवसर पर जहाँ लोग विभिन्न धर्मों का नाम लेते समय जैनधर्म का उल्लेख भी नहीं कर पा रहे थे, व्याख्यान के बाद समापन समारोह तक सभी विद्वान अपने वक्तव्यों में जैनधर्म का भी नामोल्लेख करने लगे, यह एक बड़ी उपलब्धि रही।

डॉ. जैन ने टोक्यो जैन संघ द्वारा आयोजित दो विशिष्ट व्याख्यान समारोह में वहां की जैन समाज को प्राकृत भाषा के महत्व तथा जैन तत्त्वज्ञान के महत्व से भी परिचित करवाया। डॉ. जैन इसके पूर्व ताइवान, चीन में आयोजित ऐसे ही विश्व सम्मेलन में जैनधर्म का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं।

सम्पादकीय - ✍

चिन्ता और चिन्तन : एक विचार

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

चिन्ता हो या चिन्तन - नींद तो दोनों ही स्थितियों में नहीं आती, पर चिन्ता से चिन्तन श्रेष्ठ है। चिन्ता एक मानसिक विकृति का नाम है और चिन्तन है विशुद्ध तत्त्वविचार। चिन्ता अशान्ति और आकुलता की जननी है और चिन्तन है निराकुलता और शान्ति का स्रोत। चिन्तायें चेतन को जलाती हैं और चिन्तन राग-द्वेष को, मन के विकारों को। चिन्ताओं के घेरे में आत्मा अनुपलब्ध रह जाता है और चिन्तन से होती है आत्मतत्त्व की उपलब्धि।

अत: विवेकीजन चिन्ताओं की राह छोड़कर चिन्तन की राह ही पकड़ते हैं। तत्त्वचिन्तन ही सदैव आदरणीय है, अनुकरणीय है।

विज्ञान बिस्तर पर पड़े-पड़े बहुत देर तक सोने की चेष्टा करता रहा, पर वह चिन्ताओं के घेरे में ऐसा उलझ गया था कि उसे रात्रि में तृतीय प्रहर तक नींद नहीं आई। आती भी कैसे ? चिन्ता और निद्रा का तो परस्पर साँप और नेवले की तरह जन्मजात वैर-विरोध है।

चिन्ताओं की परेशानी से बचने के लिये व्यक्ति अचेत हो जाना चाहता है, नींद की गोलियाँ खाकर भी सोना पड़े तो भी सो जाना चाहता है।

पर, आज विज्ञान की चिन्ता का विषय और कुछ नहीं, उसके स्वयं के अंधकारमय भविष्य को ज्योतिर्मय बनाना था, क्योंकि सुदर्शन ने और उसके फैमिली डॉक्टर ने उसको उसकी यथार्थ स्थिति का बहुत अच्छी तरह आभास करा दिया था। इसकारण आज उसके मानस-पटल पर सुदर्शन और डॉक्टर के द्वारा दर्शाये गये उसके भावी जीवन के भयानक दृश्य चलचित्र की भाँति एक के बाद एक उभर कर आ रहे थे और वह उनके सही समाधान की खोज में चिंतित था।

वह सोच रहा था -''सुदर्शन जो भी कहता है वह सब ठीक ही तो कहता है, उसकी बातें बिना सोचे-समझे यों ही अनसुनी करने लायक नहीं है। उसकी एक-एक बात विचारणीय है, अनुकरणीय है।

एक तो वह दुर्व्यसन छोड़ने और दुराचारियों से दूर रहने की सलाह देता है और दूसरे, देवदर्शन करने और समय पर प्रवचनों में पहुँचने का आग्रह करता है, इसके सिवाय वह और कहता ही क्या है ?

उसे तो देखो, कितने व्यस्त कार्यक्रम में से वह इन कामों के लिये अपना समय निकाल लेता है। नया-नया वकील बना है, अत: काम जमाने के लिये जनसम्पर्क करना भी जरूरी है और कानून की किताबें पढना भी अति आवश्यक है। प्रतिदिन सुबह-शाम कम से कम दो घण्टे बैठक में बैठकर फाइलें भी देखना और सम्बन्धित व्यक्तियों से बातचीत करना भी अनिवार्य है; फिर भी वह प्रतिदिन दर्शन-पूजन करने और प्रवचन सुनने से नहीं चूकता। इतना ही नहीं, मुझ जैसे मित्रों का मार्गदर्शन करने और सामाजिक समस्याओं को सुलझाने का समय भी वह निकाल ही लेता है।

मैं ही एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो अपना सारा समय यों ही बिना काम की बातों में बर्बाद करता रहता हूँ। 'मेरे पास समय नहीं, मुझे फुरसत नहीं' - यह तो केवल एक बहाना है। जिसकी जिस काम में रुचि होती है, उस काम के लिये तो उसके पास समय ही समय है। 'हाथ कंगन को आरसी क्या ?' सुदर्शन को ही देख लो न ! कितना व्यस्त है वह, फिर भी समय निकाल लेता है न इन कामों को ?

मेरे पास ऐसा काम ही क्या है ? धंधा व्यापार तो सब पहले से ही जमा-जमाया है और मेरे सौभाग्य से काम-काज की देखभाल करने वाले कर्मचारी अपने काम के प्रति पूर्ण ईमानदार, अनुभवी एवं पूर्ण कुशल हैं। मैं घर का कामकाज देखता भी कितना हूँ ? फिर भी मैं कुछ नहीं कर पाता।

वस्तुत: यह मेरी ही कमजोरी है, मैं ही अपनी आदतों का दास हो रहा हूँ, इसमें किसी और को दोषी ठहराना ठीक नहीं है। मुझे स्वयं ही चेतना होगा। मेरे हित में जो सुदर्शन सोचता है, ज्ञान सोचता है, विद्या भी वही सब चाहती है। मेरी इन्हीं आदतों के कारण वह मुझसे रूठी-रूठी-सी भी रहती है। और अब तो डॉक्टर साहब भी यही सलाह देने लगे हैं।

वे उस दिन कह ही रहे थे -''यदि आपने मदिरापान करना और सिगरेट पीना नहीं छोड़ा तो अब आप इस दुनिया में अधिक दिन नहीं रह पायेंगे। बात कुछ कठोर है, मुझे डॉक्टर के नाते तो ऐसी निराशाजनक बात नहीं कहनी चाहिये, पर मैं एक मित्र के नाते आपको साफ-साफ बता देना चाहता हूँ कि आपकी आँतें और लीवर जैसे महत्वपूर्ण अंग मदिरा के क्षारतत्त्व से अत्यधिक प्रभावित हो चुके हैं और सिगरेट के धुएँ से आपके फेंफड़े भी क्षीण हो चुके हैं। सोच लो ! यदि जिन्दगी प्यारी हो तो अब यह सब छोड़ना ही पड़ेगा।''

विज्ञान ने मन ही मन विचार किया -''ये सब मेरे कोई शत्रु तो हैं नहीं। लगता है मेरी बुद्धि पर ही पत्थर पड़ गये हैं जो मैं किसी की कुछ सुनना ही नहीं चाहता और अपनी ही मनमानी किये जा रहा हूँ।'' (क्रमश:)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मेरठ द्वारा आयोजित ज्ञान महोत्सव

श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान एवं 49वाँ श्री वीतराग–विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर

णमो लोए सव्व साहूणं।

मंगल

रविवार, 24 मई 2015 से बुधवार, 10 जून 2015 तक

श्री दि. जैन मन्दिर तीरगरान मेरठ शहर में कुऐं से प्राप्त अतिप्राचीन व अतिशय युक्त श्री चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमा

आमन्त्रण

अहा हा हा! अरे! हम तो देव-गुरु-धर्म के दासानुदास हैं।
जिसे ऐसा विनय-बहुमान नहीं है, उसकी वृत्ति धर्म में नहीं है।

कार्यक्रम स्थल :
जैन बोर्डिंग हाऊस, तीर्थंकर महावीर मार्ग (रेलवे रोड)
मेरठ शहर (उ.प्र.)

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

परमादरणीय जिनधर्मवत्सल-तत्त्वपिपासु-साधर्मीजन, सादर जय-जिनेन्द्र एवं शुद्धात्म वंदन !

अनन्ततीर्थंकर भगवन्तों में वर्तमानकालीन श्री ऋषभदेव से श्री महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकरों की दिव्यदेशना से गौतमगणधर, आचार्य धरसेन, आचार्य कुन्दकुन्द एवं आचार्य समन्तभद्र की श्रुतपरम्परा में पण्डित टोडरमलजी, पण्डित दौलतरामजी आदि की समृद्ध परम्परा में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग से भगवान श्री शान्तिनाथ, श्री कुन्थुनाथ, श्री अरनाथ के चार-चार कल्याणकों व 5 चक्रवर्तियों की कर्मभूमि एवं श्री ऋषभदेव के प्रथम पारणा तथा वात्सल्य पर्व रक्षा बन्धन की पौराणिक घटना से पवित्र भूमि हस्तिनापुर (इन्द्रप्रस्थ) के अंचल मेरठ नगर में देश-विदेश में ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं बाल ब्र0 श्री सुमतप्रकाशजी की पावन प्रेरणा एवं सानिध्य में दिनांक 24 मई 2015 से 10 जून 2015 तक श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान एवं 49वां श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के आयोजन करने का शुभभाव हृदय में उत्पन्न हुआ है।

जिनधर्म प्रभावना का यह एक महान लोकोत्तर अनुष्ठान है, जिसमें कोमलमति बालकों एवं युवाओं को जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान कराया जायेगा एवं प्रशिक्षणार्थियों को सुयोग्य प्रशिक्षकों द्वारा इस तात्त्विक विद्या को जन-जन तक पहुँचाने की कला की प्रयोगात्मक पद्धति और मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ सिखाई जायेंगी एवं इसका प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। शिविर में विद्वानों के प्रवचनों, व्याख्यानमाला एवं प्रौढ कक्षाओं का भी आयोजन किया जायेगा। वह शुभ घड़ी आ गई है जब आप और हम सभी मिलकर अन्तर्मुखी पुरुषार्थपूर्वक आत्म-आराधना करते हुये स्वानुभूति सहित सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सच्चे रूप में जिनशासन की मंगलमय प्रभावना में सहभागी बनें।

आइये ! धार्मिक भक्ति गंगा एवं ज्ञान महोत्सव में इष्ट मित्रों सहित, सपरिवार पधारकर अपना मोक्षमार्ग प्रशस्त करें।

विशेष आकर्षण

(रविवार, 24 मई 2015)

प्रात: 6 बजे - भव्य जिनेन्द्र रथयात्रा व घटयात्रा

रथयात्रा व घटयात्रा श्री दि. जैन मन्दिर, तीरगरान, मेरठ शहर से प्रारम्भ होकर बजाजा, सर्राफा, वैली बाजार,घंटाघर होते हुए जैन बोर्डिंग हाऊस, रेलवे रोड पहुँचेगी।

प्रात: 8 बजे - ध्वजारोहण व उदघाटन समारोह

प्रथम बार 13 फुट उतंग स्वर्णमयी मानस्तम्भ का रथयात्रा में मंगल विहार

आत्मार्थी कन्या निकेतन दिल्ली की छात्राओं की मनमोहक प्रस्तुति-रविवार, 24 मई 2015

स्नातक परिषद का अधिवेशन - सोमवार, 25 मई 2015

स्वानुभूति महिला मण्डल उस्मानपुर दिल्ली की विशेष प्रस्तुति - मंगलवार 26 मई 2015

धार्मिक काव्य संध्या - सौरभ जैन 'सुमन', अनामिका जैन 'अम्बर', धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा
बुधवार, 27 मई 2015

माता व देवियों की चर्चा - बृहस्पतिवार, 28 मई 2015

विद्वत्समागम

सर्वश्री पं. रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, कमलचन्दजी पिड़ावा, ब्र. यशपालजी जयपुर, अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, रजनीभाई दोषी, वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, शान्तिकुमारजी पाटिल जयपुर, धनसिंहजी पिड़ावा, डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर इत्यादि के अतिरिक्त अनेक विद्वानों का प्रवचन व कक्षाओं के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा।

साधर्मी वात्सल्य भोज के आमन्त्रणकर्ता परिवार

श्री जे.के. जैन आशीष जैन परिवार 'कलश वाले' शामली
डॉ0 गौरव जैन निधि जैन वीरूकुआँ, मेरठ
श्री धनकुमार जैन अदिति जैन थापरनगर, मेरठ
श्री सुनील कुमार विवेक जैन विश्वास नगर, दिल्ली
श्री इन्द्रसेन अरविन्द जैन, मान्या टैक्सटाईल्स, सरधना
श्री दीपक जैन-श्री संजय जैन-श्री पंकज जैन (ज्योति हैण्डलूम सरधना)
श्री राकेश जैन शरद जैन (खेकडा कैमिकल, खेकडा)
मुमुक्षु मण्डल अलीगढ़

जिनवाणी विराजमानकर्ता

श्री पंकज जैन अलका जैन
ठठेरवाडा, मेरठ
श्री अजय कुमार जैन नीलम जैन
छीपीवाडा, मेरठ
श्री अरिदमन जैन राजुल जैन
शारदा रोड, मेरठ
श्री पवन जैन दिनेश जैन
पैनामा वाले, मेरठ

पेयजल : श्री भूषण स्वरूप मुकेश कुमार जैन चैरिटेबल ट्रस्ट, न्यू प्रेमपुरी, मेरठ

विधान के आमंत्रणकर्ता
श्री नरेन्द्र कुमार अम्बुज जैन
महावीरजी नगर, मेरठ

विधान के उदघाटनकर्ता
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
सूरजमल विहार, दिल्ली

विधान सामग्री प्रदाता
श्री मनीष जैन 'सर्राफ' रीना जैन
वैदवाडा, मेरठ

शिविर के आमंत्रणकर्ता
श्री सौरभ जैन पूजा जैन
नवकार टैक्सटाईल्स, खन्दक, मेरठ

ध्वजारोहणकर्ता
श्री अजित कुमार जैन
बडौदा (गुजरात)

शिविर के उदघाटनकर्ता
श्री अजित प्रसाद जैन
राजपुर रोड, दिल्ली

दैनिक कार्यक्रम

प्रातः 5.00 से प्रातः 6.00 तक – मंगल जागरण व प्रौढ कक्षा
प्रातः 6.00 से प्रातः 7.30 तक – नित्य नियम पूजन व विधान
प्रातः 8.00 से प्रातः 11.30 तक – विभिन्न कक्षाऐं व प्रवचन
दोपहर 1.30 से सायं 4.30 तक – विभिन्न कक्षाऐं
सायं 6.00 से सायं 6.45 तक – विभिन्न कक्षाऐं
सायं 6.45 से सायं 7.30 तक – जिनेन्द्र भक्ति
सायं 7.30 से रात्रि 9.15 तक – प्रवचन
रात्रि 9.15 से रात्रि 10.00 तक – सांस्कृतिक कार्यक्रम

पंच कल्याणक की झलकियाँ

पालना झूलन (शनिवार, 30 मई 2015)
भगवान श्री सुपार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक महोत्सव
(60 फुट लम्बा विश्व प्रसिद्ध मैनपुरी का पालना)
पालना उद्घाटनकर्ता : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, उस्मानपुर, दिल्ली

- ज्ञान महोत्सव के सहभागी भव्य जीव -

ज्ञान नगरी के उद्घाटनकर्ता	शिविर शिरोमणी संरक्षक	स्वागताध्यक्ष	मंच के उद्घाटनकर्ता
श्री सुनील कुमार जैन निशा जैन छीपीवाडा, मेरठ	लाला अभिनन्दन प्रसाद जैन 'रईस' सहारनपुर	डॉ. पी.के. जैन रुड़की	श्री मुकेश जैन रजनी जैन देवलोक, मेरठ

महोत्सव गौरव : श्री विमल कुमार जैन, नीरू कैमिकल्स, दिल्ली

शिविर संरक्षक : ऋषभायतन अर्न्तगत श्री वीतराग स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट अजमेर, श्री सुनीलकुमार हजारी लाल जैन 'सरोज स्टील' कोचीन श्री रखबचन्द नेमीचन्द पहाडिया पीसांगन, श्रीमती मंजूला कविन सी. पारिख मुम्बई

निवेदक

परम संरक्षक : नवीन जैन (सर्राफ) | चेयरमैन : सुरेश जैन (रितुराज) | मुख्य संयोजक : मूलवर्धन जैन (सर्राफ) | अध्यक्ष : मुकेश जैन | मंत्री : सौरभ जैन | कोषाध्यक्ष : पंकज जैन

सम्पर्क सूत्र : 9412749670, 9897241464, 9837637542, 9837020293, 9760418799
Email : mrtshivir@gmail.com, website : www.jainyuvafedration.com
कार्यालय : 'नवकार टैक्सटाईल्स' 74, खन्दक बाजार, मेरठ शहर-250002

आयोजक : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मेरठ

घटयात्रा के विशेष कलश

श्रीमति कंचन जैन - मूलवर्धन जैन, सर्राफ
श्रीमति सन्तोष जैन - सहदेव जैन, बुढ़ाना गेट
श्रीमति राजबाला जैन - माणिक चन्द जैन, ब्रह्मपुरी
श्रीमति नीलम जैन - श्री संजय जैन (कैसेट वाले)
श्रीमति रविप्रभा जैन - श्री अनिल जैन (पारस पेपर)

यज्ञ नायक
श्री हंसकुमार जैन बबीता जैन किताब वाले, मेरठ

सौधर्म इन्द्र
श्री अभिषेक जैन आरती जैन किताब वाले, मेरठ

कुबेर इन्द्र
श्री मीतू जैन गरिमा जैन किताब वाले, मेरठ

सहयोगी संस्थायें

भारतीय जैन मिलन, दिगम्बर जैन महासमिति
जैन बोर्डिंग हाऊस सोसाइटी मेरठ, मुमुक्षु मण्डल देहरादून
तीर्थधाम चिदायतन हस्तिनापुर, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़
आत्म साधना केन्द्र दिल्ली, सर्वोदय महिला समिति मेरठ
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन सहारनपुर
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन खेकडा
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन विश्वास नगर, दिल्ली
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उस्मानपुर, दिल्ली
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन खतौली
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मुजफ्फरनगर

विशेष अनुरोध

टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों की प्रवेश प्रक्रिया भी इसी शिविर में पूर्ण की जाती है, अत: प्रवेश-इच्छुक छात्र शिविर में मेरठ अवश्य पहुँचें।

जो महानुभाव शिविर में मेरठ पधार रहे हैं, वे अपने आगमन की पूर्व सूचना 20 मई तक जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें, ताकि उनके आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके।

विशेष आकर्षण

इन्द्र सभा - शुक्रवार, 29 मई 2015

जिनवाणी यात्रा - रविवार, 31 मई 2015

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन (रविवार, 31 मई 2015)

श्री टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय के छात्रों द्वारा एकांकी - सोमवार, 1 जून 2015

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत परिषद व टोडरमल स्नातक परिषद द्वारा विद्वत संगोष्ठी
(विषय : सर्वज्ञता : जैन दर्शन का आधार) (सोमवार, 1 जून 2015 - दोपहर 2.30 से 4 तक)

पं0 संजय जी शास्त्री मंगलायतन द्वारा एक अदभुत व रोचक कार्यक्रम
गौरव गाथा - जैनधर्म का इतिहास (शुक्रवार, 5 जून 2015)

तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़ के मंगलार्थियों द्वारा प्रेरक कार्यक्रम - शनिवार, 6 जून 2015

श्री जैन धर्म शिक्षा सदन तीरगरान, मेरठ शहर का हीरक जयन्ती समारोह (रविवार, 7 जून 2015)

3000 वर्ग फुट के विशाल मंच पर समवशरण की अद्वितीय रचना

विशिष्ट अतिथि

अहमदाबाद : श्री निखिल जी मेहता, श्री सतीश ए. मेहता, श्री रमेश भाई शाह USA : श्री सौरभ मॉगलिक, मुम्बई : श्री कान्ती भाई मोटानी, श्री विपुल कान्ती भाई मोटानी, श्री अनन्त भाई ए. सेठ, श्री अक्षय भाई दोषी कोटा : श्री प्रेमचन्द जी बजाज अलीगढ़ : श्री पवन कुमार जैन, श्री मुकेश जैन, श्री स्वपनिल जैन इन्दौर : श्री अशोक कुमार बडजात्या, श्री विजय बडजात्या दिल्ली : श्री मंगलसैन जैन, श्री पृथ्वी चन्द जैन, श्री श्रीराम जी जैन, श्री अमित जैन (सहारनपुर वाले) श्री आदीश कुमार जैन, श्री नरेश लुहाडिया, श्री बज्रसेन जैन, श्री प्रमोद जैन, श्री जयपाल जैन मुकेश जैन दरीवां, श्री दीपक जैन, श्री नरेन्द्र जैन बाहुबली एन्कलेव बुलन्दशहर : श्री अनिल जैन जयपुर : श्री अजीत कुमार जैन, श्री दिलीप भाई साहा सहारनपुर : श्री राजकुमार जैन, श्री मुकेश जैन 'सर्राफ', श्री राजीव जैन, श्री संदीप जैन, श्री ऋषभ जैन कानपुर : श्री आलोक जी ग्वालियर : श्री सुरेन्द्र कुमार नरेन्द्र कुमार जैन, श्री मुकेश जैन जैना ज्वैलर्स, श्री सुनील शास्त्री 'अहिंसा ज्वैलर्स' गन्नौर: श्री राजेन्द्र जी मुजफ्फरनगर : श्री मनोज जैन, श्री अभय जैन रुड़की : श्री साधुराम जी खतौली : श्री नरेन्द्र कुमार जैन 'सर्राफ', श्री कलपेन्द्र जैन, श्री नेमचन्द जी जैन खेकडा : श्री प्रवीन जैन राकेश जैन किशनगढ : श्री प्रदीप चौधरी जसवन्त नगर : डा. शिवकान्त जैन, श्री कुमुद कुमार जैन 'छते वाले' सरधना : श्री नरेन्द्र कुमार जैन बिजली वाले, श्री अशोक जैन, मोदीनगर : श्री विनय कुमार जैन, मेरठ : श्री संजय जी प्रियांशु जी, दी अध्ययन स्कूल पं0 धर्मवीर सिंह जैन 'वीर आटो', श्री सौरभ जैन 'सुमन', श्री कीमती लाल जैन, जैन नगर, श्री मोती लाल जैन, जैन नगर, श्री राजेन्द्र जैन, जैन नगर, श्री देवेन्द्र जैन, जैन नगर, श्री रमेश जैन, जैन नगर, श्री नरेश जैन, जैन नगर।

चित्र स्थापनकर्ता : आचार्य धरसेन - श्री विकास जैन सीमा जैन शास्त्रीनगर, गाजियाबाद | आचार्य कुन्दकुन्द - श्री नीरज जैन शालिनी जैन कालका जी, दिल्ली | पंडित टोडरमलजी - डॉ. विनोद जैन सुशीला जैन हाई यूनानी दवाखाना, मेरठ | आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी - श्री अरुण जैन (एडवोकेट) खन्दक बाजार, मेरठ

मुख्य कलश स्थापनकर्ता : श्रीमती राखी-सनत कुमार जैन कवाल वाले, मेरठ | श्रीमती कविता-पवन जैन पैनामा वाले, मेरठ | श्रीमती इन्दु-अतुल जैन पल्लवपुरम, मेरठ | श्रीमती सुनीता-राजीव कुमार जैन पी.डब्लू.डी., छीपीवाडा, मेरठ

विशेष : मेरठ दिल्ली से 65 कि.मी. की दूरी पर है। दिल्ली से समय-समय पर मेरठ के लिए बस व रेल सेवा भी उपलब्ध है। मेरठ से श्री हस्तिनापुर तीर्थ क्षेत्र 35 कि.मी., विश्व प्रसिद्ध त्रिलोक तीर्थ बड़ा गाँव 50 कि.मी., तीर्थधाम मंगलायतन 140 कि.मी. व आत्मसाधना केन्द्र 80 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

नोट : बालबोध प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिए बालबोध पाठमाला भाग- 1, 2, 3 की तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिए वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1, 2, 3 की प्रवेश प्रतियोगिता लिखित परीक्षा दिनांक 24 मई को दोपहर 2.00 बजे से ली जायेगी, जिसमें प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा। अत: प्रवेशार्थी उक्त पुस्तकों की पूरी तैयारी करके आएं। प्रवेशिका प्रशिक्षण में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा, जो बालबोध प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकें हैं। सभी प्रशिक्षणार्थी एवं शिविरार्थी अपना पासपोर्ट साइज फोटो एवं परिचय-पत्र साथ में अवश्य लायें।

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए - (बारहवीं किश्त, गतांक से आगे)

- परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा कि **''मुझे समय-समय और स्थान-स्थान पर विभिन्न अपेक्षाओं से दिये गये नाम और उनकी अप्रासंगिकता क्या है''** अब आगे पढिये -

अहम् बात यह है कि हालांकि यह बात सही है कि मुझे जो भी नाम दिये जाते रहे हैं वे किसी न किसी अपेक्षा दोषपूर्ण अवश्य हैं, पर यह भी तो उतना ही बड़ा सत्य है कि कुछ अंशों में ही सही, वे नाम मुझे इंगित भी करते ही हैं, मेरा प्रतिनिधित्व भी करते हैं, तब उन्हें आप सम्पूर्णत: कैसे झुठला सकते हैं ?

आपके इस प्रश्न के उत्तर में मैं आपसे ही एक प्रश्न पूछता हूँ -

एक बर्तन में 100 आम रखे हैं, एक बालक से कहा गया कि वह गिनकर बतलाये कि उस बर्तन में कितने आम हैं। उसने बतलाया 99।

अब आप बतलाइये कि उस बालक का उत्तर सही है या गलत ?

यदि आप कहते हैं कि गलत है, तो मेरा आपसे प्रश्न है कि गलत क्यों है ? उत्तर सम्पूर्णत: गलत तो नहीं है, सम्पूर्णत: गलत तो वह तब होता जब वह आमों की सत्ता से ही इनकार कर रहा होता, वह कहता कि ''एक भी नहीं'' उसमें आम हैं ही नहीं, यदि वह 99 आमों का होना स्वीकार कर रहा है तो उसका उत्तर 99 प्रतिशत तो सही है न !

क्या आप इससे सहमत हैं ?

नहीं ?

अच्छा मानलें कि वह कहे 101, तब आप उसे क्या कहेंगे, सही या गलत ?

आप कह सकते हैं कि 101 में 100 तो अंतर्निहित है, उसमें 100 तो आ ही जाते हैं, इसलिये यह उत्तर सही है; क्योंकि उसने एक भी आम के होने से इनकार नहीं किया है, उसने पूरे 100 आमों का होना तो स्वीकार किया है न, अब वह 101वाँ आम नहीं है इतने मात्र से 100 आमों की सत्ता और उस सत्ता की स्वीकृति से कैसे इनकार किया जा सकता है ?

पर नहीं उक्त दोनों ही जवाबों 99 एवं 101 को सत्य नहीं कहा और माना जा सकता है; क्योंकि प्रश्न न तो मात्र आमों के बारे में था और न सिर्फ संख्या के बारे में, प्रश्न 'आमों की संख्या' के बारे में संयुक्त रूप से था।

एक और सवाल; यदि उक्त प्रश्न के जवाब में वह कहता कि 1 आम है तो क्या यह जवाब भी 99 की ही तरह गलत होगा ?

क्या 99 और 1 दोनों ही जवाब एक जैसे ही गलत हैं, इन दोनों में कोई फर्क ही नहीं, 99 में और 1 में कोई फर्क ही नहीं ? 99 सत्य के एकदम निकट है और 1 सत्य से अत्यंत दूर, तब भी ?

एक गणित के मास्टर की नजर में तो दोनों ही जवाब शतप्रतिशत गलत ही हैं और 99 भी सत्य से उतना ही दूर है जितना 1।

यदि कोई बटन 100 बार दबाने से कोई ताला खुलता है तो न तो वह 99 बार दबाने से खुलेगा और न ही 1 बार दबाने से, इसप्रकार 99 बार बटन दबाने से भी शतप्रतिशत असफलता ही हाथ लगेगी, 99 प्रतिशत नहीं।

उक्त उदाहरण की ही भाँति **'मैं' के वे लक्षण जो आंशिक रूप से 'मैं' का प्रतिनिधित्व करें, 'मैं' को इंगित करें, सही नहीं हो सकते हैं।**

हालांकि नींबू खट्टा होता है पर 'जो खट्टा हो उसे नींबू कहते हैं', यह परिभाषा सही नहीं हो सकती है; क्योंकि मात्र इस परिभाषा के आधार पर नींबू की पहिचान नहीं हो सकती है, यदि इस परिभाषा के आधार पर किसी से नींबू लाने के लिये कहा जाये और वह इमली लेकर आ जाये तो आप उसे कैसे झुठलायेंगे ?

शास्त्रीय भाषा में कहें तो 'जो खट्टा हो उसे नींबू कहते हैं' यह परिभाषा 'अतिव्याप्ति दोष' से दूषित है; क्योंकि अन्य अनेकों पदार्थ भी खट्टे होते हैं।

'जो पीला हो उसे नींबू कहते हैं' नींबू की यह परिभाषा 'अतिव्याप्ति' दोष से तो दूषित है ही; क्योंकि नींबू के अलावा अन्य अनेकों पदार्थ भी पीले होते हैं, पर साथ ही यह 'अव्याप्ति' दोष से भी दूषित है; क्योंकि नींबू अन्य रंगों का भी होता है, यथा कच्चा नींबू हरा होता है। नींबू को मीठा कहना 'असंभव' दोष है; क्योंकि नींबू मीठा होता ही नहीं।

मात्र वही परिभाषा किसी वस्तु की पहिचान का लक्षण हो सकती है जो अतिव्याप्ति, अव्याप्ति और असंभव तीनों प्रकार के दोषों से रहित हो।

ऊपर मेरे ('मैं' के) जिन-जिन नामों की चर्चा की गई है, वे सब संयोगाधीन हैं, निरपेक्षा नहीं; जबकि मैं निरपेक्ष हूँ, संयोगाधीन नहीं। मुझे 'मैं' होने के लिये किसी संयोग की आवश्यकता नहीं, यह संयोग हो या वह, या संयोग हो ही नहीं पर मैं रहूँगा तब संयोग से अपनी पहिचान करना कहाँ तक उचित और सही हो सकता है ?

यहाँ एक और अत्यंत गम्भीर प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि ''मैं'' को समय-समय पर दिये जाने वाले नाम 100 प्रतिशत गलत ही है, तो क्या उनमें कोई सत्यता नहीं है ?

यदि ऐसा ही है तो उसे (''मैं'' को) उन नामों से पुकारा ही क्यों गया ?

मात्र पुकारा ही नहीं गया, वरन उन नामों से अब तक मेरी (''मैं'' की) पहिचान भी होती ही रही है न ? तब वह सर्वथा गलत कैसे हो सकते हैं ?

उक्त प्रश्न का जवाब पाने के लिये हमें जैनदर्शन में वर्णित ''नय व्यवस्था'' का अध्ययन करना होगा, जिसके अनुसार उक्त समस्त कथन व्यवहारनय के कथन हैं और व्यवहारनय असत्यार्थ है; क्योंकि व्यवहारनय की परिभाषा ही यह है कि **''जो सत्यार्थ तो है नहीं पर निमित्तादिक की अपेक्षा उपचार से कथन किया गया हो वह व्यवहारनय का कथन है।''**

(जैनदर्शन में नय व्यवस्था अपने आपमें एक विषद विषय है, जिसकी सम्पूर्ण चर्चा यहाँ संभव नहीं है, रुचिवंत लोगों को डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित ग्रन्थ ''द्रव्यस्वभाव प्रकाशक नयचक्र'' का स्वाध्याय करना चाहिये)

व्यवहार वस्तु का सम्पूर्ण कथन नहीं करता है वरन किसी अपेक्षा से कथन करता है, वह कथन उक्त अपेक्षा से सही होता है और यथास्थान कुछ अंशों में अपने प्रयोजन की सिद्धि भी करता है पर अपने आपमें वह सम्पूर्ण व निरपेक्ष सत्य नहीं है।

''मैं'' किसी के सापेक्ष कोई आधी अधूरी वस्तु नहीं वरन अपने आपमें सम्पूर्ण, निरपेक्ष वस्तु हूँ इसलिये किसी एक नय का कथन मेरी (''मैं'' की) सम्पूर्ण परिभाषा (लक्षण) नहीं हो सकता है।

प्रश्न यह है कि ''मैं'' कौन हूँ ?

जो हर हाल में कायम रहता है वह ''मैं'' हूँ या जो हर पल बदलता रहता है वह ''मैं'' हूँ ?

जो निरपेक्ष है वह ''मैं'' हूँ या जो संयोग सापेक्ष है वह ''मैं'' हूँ ?

जो ''कायम'' है उसके हित-अहित हमेशा एक रहेंगे, एक जैसे रहेंगे, अपरिवर्तित रहेंगे और जो बदलता रहेगा उसके हित-अहित, उसके सुख-दु:ख, उसकी अनुकूलता-प्रतिकूलता प्रतिपल बदलती रहेगी।

हमें क्या इष्ट है, क्या अभीष्ट है ?

स्थिरता या अस्थिरता ?

निरपेक्षता या सापेक्षता ?

अब तक हमने अपनी ''मैं'' की परिभाषा निर्धारित करने में क्या भूलें कीं और ''मैं'' की निर्दोष परिभाषा क्या है, यह जानने के लिये पढिये अगला अंक। **(क्रमश:)**

अभिनन्दन समारोह संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा साधना नगर स्थित पंचबालयति जिनालय पर श्री मनोहरलाल काला स्मृति स्वरूप प्रेरणा दिवस पर प्रथम अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन के प्रवचन का लाभ मिला।

सर्वप्रथम जिनेन्द्र-पूजन विधान संपन्न हुआ, तत्पश्चात् कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती मौनल बड़जात्या, नीलू काला व नीलू गंगवाल के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोकजी बड़जात्या (राष्ट्रीय अध्यक्ष-दिगम्बर जैन महासमिति), ब्र. जतीशचंजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, श्री आर.के. जैन रानेका आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल को अध्यात्म प्रणेता की उपाधि तथा श्रीमती कमलप्रभा बड़जात्या को जिनधर्म प्रभाविका की उपाधि से विभूषित किया गया। सम्मानित व्यक्तियों को शॉल, श्रीफल व अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री विजयजी बड़जात्या एवं आभार प्रदर्शन श्री सुशीलजी काला ने किया।

स्वाध्याय भवन का उद्घाटन एवं रत्नत्रय मण्डल विधान संपन्न

नवी मुम्बई : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय भवन वाशी का उद्घाटन समारोह दिनांक 3 मई को रत्नत्रय मण्डल विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित हेमन्तभाई गांधी, ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना, पण्डित जितेन्द्रप्रकाशजी दोशी आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा संपन्न हुये।

आगामी कार्यक्रम...

उपकार समर्पण समारोह कार्यक्रम जिनवाणी चैनल पर

तीर्थधाम मंगलायतन में आयोजित **उपकार समर्पण समारोह** कार्यक्रम का जिनवाणी चैनल पर भव्य प्रसारण दिनांक 21 मई से 25 मई 2015 समय रात्रि 9.30 से 10.00 बजे होगा। यह चैनल एयरटेल के चैनल नम्बर 684 एवं वीडियोकॉन के चैनल नम्बर 489 पर उपलब्ध है। **- अशोक लुहाड़िया**

रत्नत्रय शिक्षण शिविर का आयोजन

अखिल भा.दि. जैन विद्वत्परिषद एवं 'आशा' के संयुक्त तत्त्वावधान में 15 से 17 जून तक श्री दिग. जैन मंदिर वसुन्धरा सेक्टर 10 गाजियाबाद (उ.प्र.) में रत्नत्रय शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इस शिविर में प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. अशोक जैन गोयल शास्त्री (मंत्री विद्वत्परिषद्) पधारेंगे।

शिविर की आयोजक महिला जैन समाज एम.पी. जैन इंदिरापुरम् गाजियाबाद हैं।

समय : सायंकाल 7 से 9 तक अवश्य लाभ लें।

- अखिल बंसल, जयपुर

बाल संस्कार शिविर संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट साधना नगर द्वारा दिनांक 3 से 10 मई तक आयोजित आठ दिवसीय संस्कार शिविर उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ के अतिरिक्त टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय, बांसवाड़ा व कोटा महाविद्यालय के शास्त्री विद्वानों का भी लाभ मिला।

शिविर में लगभग 700 बालक-बालिकाओं ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये। अन्तिम दिन पुरस्कार वितरण समारोह के अन्तर्गत प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे छात्रों को पुरस्कार व सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

इस शिविर की विशेषता यह है कि पूर्णत: नि:शुल्क शिविर पिछले 14 वर्षों से संचालित हो रहा है। सभी बच्चों को शिविर से संबंधित सामग्री, भोजन व आवागमन सुविधा नि:शुल्क प्रदान की जाती है।

- विजय बड़जात्या, इन्दौर

शोक समाचार

(1) मुम्बई निवासी श्रीमती जयाबेन जयन्तीलाल दोशी का दिनांक 30 अप्रैल को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप टोडरमल स्मारक द्वारा चलाई जा रही तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों में अनन्य सहयोगी थीं।

(2) भैंसरोडगढ-चित्तौड़गढ (राज.) निवासी श्री फूलचंदजी हरसौरा का दिनांक 25 अप्रैल को 88 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयजी हरसौरा के पिताजी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) जयपुर (राज.) निवासी श्री प्रसन्नकुमारजी सेठी का दिनांक 10 मई को 85 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों सहित देहावसान हो गया। आप टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टी स्व. महेन्द्रकुमारजी सेठी के लघु भ्राता थे। सन् 1953 में श्रीमान स्व. पूरनचंदजी गोदिका एवं अपने भाई महेन्द्रकुमारजी सेठी के साथ सोनगढ गये और तभी से आप पूज्य गुरुदेवश्री के मिशन के लिये समर्पित हो गये। जीवनभर आप तत्त्वज्ञान की गतिविधियों से अत्यंत गहराई के साथ जुड़े रहे। गुरुदेव भी अनेक बार आपको प्रवचनों आपको सम्बोधित कर प्रेरणा देते थे।

टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान की गतिविधियों में अनन्य सहयोगी थे। आपके देहावसान से मुमुक्षु समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail : info@vitragvani.com

हार्दिक बधाई !

जयपुर जनता कॉलोनी निवासी **चि.पराग जैन सुपुत्र अनिल संध्या जैन** का शुभ विवाह **सौ.कृतिका जैन सुपुत्री अरुण कुमार सुमन जैन** मालवीय नगर जयपुर के साथ दिनांक 12 अप्रैल को संपन्न हुआ। इस अवसर पर जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये हस्ते चन्द्रा जैन प्राप्त हुये।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2015

प्रति

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.;
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल;** प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com फैक्स : (0141) 2704127